विजयवाड़ा – ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

विजयवाड़ा भारतीय रेलवे के सबसे महत्वपूर्ण जंक्शनों में से एक है, जो रणनीतिक रूप से चेन्नई-नई दिल्ली उत्तर-दक्षिण मार्ग और चेन्नई-हावड़ा पूर्व-तट मार्ग के त्रि-जंक्शन पर स्थित है। गुंटूर/गुंतकल और मछलीपट्टनम/नरसापुर की ओर जाने वाले रेल मार्ग भी विजयवाड़ा से जुड़ते हैं। विजयवाड़ा शहर कृष्णा नदी के उत्तरी तट पर स्थित है, जो दूसरी सबसे बड़ी प्रायद्वीपीय नदी है।

दिव्य चरित्र **:** दिव्य चरित्र यह है कि महाभारत योद्धा अर्जुन की एक वरदान के लिए तपस्या का उत्तर भगवान शिव ने इंद्र किलाद्री पहाड़ी के ऊपर पसुपथस्त्र के रूप में दिया था। विजया अर्जुन का एक और जाना-पहचाना नाम है। इसलिए, इंद्र किलाद्री पहाड़ी के नीचे के शहर को विजयवाड़ा कहा जाने लगा। विजयवाड़ा शहर के पीठासीन देवता कनक दुर्गा नामक शक्ति की देवी हैं, जिनका मंदिर इंद्र किलाद्री पहाड़ी पर स्थित है।

आधुनिक शहर: कृष्णा नदी की सिंचाई क्षमता का दोहन करने के लिए**,** तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने विजयवाड़ा में कृष्णा नदी पर एक एनीकट का निर्माण किया। इस एनीकट से जुड़ी विस्तृत नहर प्रणालियों का निर्माण कृष्णा**,** गुंटूर और पश्चिम गोदावरी जिलों में फैले पूरे कृष्णा डेल्टा क्षेत्र को कवर करते हुए किया गया था। इस प्रणाली से लगभग **13** लाख एकड़ में सिंचाई की सुविधा मिलती है। कृष्णा डेल्टा क्षेत्र में कृषि के विकास के कारण विजयवाड़ा शहर काफी समृद्ध हुआ। इस ब्रिटिश निर्मित एनीकट को **1957** में प्रकाशम बैराज से बदल दिया गया था।

नई राज्य की राजधानी: जब आंध्र प्रदेश के एकीकृत राज्य को वर्ष **2014** में विभाजित किया गया था**,** तो आंध्र प्रदेश के अवशिष्ट राज्य की सरकार ने अमरावती क्षेत्र को अपनी राजधानी के रूप में चुना है। अमरावती राजधानी क्षेत्र पूरे विजयवाड़ा शहर को अपनी चपेट में ले लेता है। अधिकांश राज्य सरकार के कार्यालयों को हैदराबाद शहर से अमरावती क्षेत्र में स्थानांतरित कर दिया गया है जहां से नवनिर्मित एपी राज्य प्रशासन वर्तमान में कार्य कर रहा है।

राष्ट्रीय प्रमुखता: विजयवाड़ा शहर ने स्वतंत्रता संग्राम सहित कई राष्ट्रीय आंदोलनों की मेजबानी की। महात्मा गांधी ने **1921** और **1929** में दो बार विजयवाड़ा का दौरा किया। यह शहर के लिए गर्व की बात है कि इसके सबसे प्रमुख नागरिकों में से एक श्री पिंगली वेंकैया ने हमारे राष्ट्रीय ध्वज को डिजाइन किया।

रेलवे इतिहास: तत्कालीन बेजवाड़ा रेलवे स्टेशन**,** जिसका नाम बदलकर विजयवाड़ा रखा गया था**,** शुरुआत में एक छोटे से शेड के साथ स्थापित किया गया था। पुराने स्टेशन का निर्माण **1928** तक मैंगलोर टाइल्स से किया गया था। नया स्टेशन भवन **19.01.1979** को जनता के लिए खोला गया था। विजयवाड़ा में रूट रिले इंटरलॉकिंग केबिन **24.01.1976** को खोला गया था।

विजयवाड़ा मंडल का विकास: मद्रास और दक्षिणी महारत्ता (एमएसएम) रेलवे को **01.07.1856** को मद्रास में मुख्यालय के साथ जनता के लिए खोल दिया गया था। बेजवाड़ा

जिला एमएसएम रेलवे का हिस्सा था, अन्य जिले रायपुरम और पोदनूर थे। क्षेत्रीय परिवहन अधीक्षक (आरटीएस) एमएसएम रेलवे के प्रभारी थे, रायपुरम मुख्यालय के रूप में। और जिला परिवहन अधीक्षक (डीटीएस) बेजवाड़ा जिले के प्रभारी थे। एमएसएम रेलवे को **1951** में दक्षिणी रेलवे के साथ मिला दिया गया था। बेजवाड़ा जिला टोंडियारपेट से वाल्टेयर (दोनों अनन्य) और काजीपेट की तरफ विजयवाड़ा स्टेशन के वेस्ट ब्लॉक केबिन तक फैला हुआ था।

विजयवाड़ा मंडल का आर्थिक परिदृश्य: विजयवाड़ा डिवीजन पूर्वी तट पर दो महत्वपूर्ण बंदरगाहों यानी कृष्णापट्टनम और काकीनाडा को पूरा करता है, जिन्होंने **2019-20** के दौरान क्रमशः **10.59** एमटी और **6.35** एमटी के कुल कार्गो को संभाला। यह प्रभाग तटीय आंध्र की जीवंत कृषि अर्थव्यवस्था की सेवा के अलावा कृष्णापट्टनम और काकीनाडा बंदरगाहों के आसपास स्थित प्रमुख औद्योगिक समूहों को भी पूरा करता है।

रेलवे विकास में महत्वपूर्ण मील का पत्थर:

1893 : कृष्णा नदी पर रेलवे पुल का निर्माण (एमजी के लिए

1893 : राजमंड्री-वाल्टेयर सेक्शन

1893 : बेजवाड़ा-कोव्वूर सेकशन

1897 : कृष्णा नदी पर रेलवे पुल का निर्माण (बीजी के लिए)

1898 : पेन्नार नदी पर पुल

1899 : बेजवाड़ा से मद्रास तक रेल मार्ग

1900 : गोदावरी नदी पर रेल पुल

1900 : मद्रास-बेजवाड़ा-हावड़ा से ट्रेन सेवा

1907 : बेजवाड़ा से मछलीपट्टनम तक एमजी ट्रैक

1930 : बेजवाड़ा से दिल्ली के लिए ट्रेन सेवा

1951 : बेजवाड़ा जिला बना दक्षिण रेलवे का हिस्सा

1956 : बेजवाड़ा मंडल को मंडल अधीक्षक की अध्यक्षता में दक्षिणी रेलवे के हिस्से के रूप में बनाया गया था।

1961 : एमजी ट्रेनें ईस्ट कोस्ट से वेस्ट कोस्ट तक मछलीपट्टनम पोर्ट से मार्मागोआ हार्बर तक चलाई गईं।.

1966 : बेजवाड़ा मंडल दक्षिण मध्य रेलवे का हिस्सा बन गया

1972 : विद्युतीकरण परियोजना शुरू हुई (इसे 25 साल में पूरा किया गया था).

1974 : गोदावरी नदी पर रेल-सह-सड़क पुल (2.984 किमी) चालू.

1977 : बेजवाड़ा मंडल का एमजी सेक्शन ताडेपल्ली से गुंतकल (छोड़कर) और गुंटूर से माचेरला तक बढ़ा दिया गया है।

1980 : विजयवाड़ा-चिराला-गुदुर के बीच पहला सेक्शन सक्रिय।.

1994 : पूरे एमजी ट्रैक को बीजी ट्रैक में बदलने के साथ विजयवाड़ा मंडल एकतरफा हो गया है।

1996 : विजयवाड़ा-राजमंड्री-दुववाड़ा सेक्शन को सक्रिय कर दिया गया था.

1997 : नया गोदावरी ब्रिज (किसी भी पीएससी रेलवे ब्रिज के लिए 97.552 मीटर की अधिकतम अवधि)।

वर्तमान विजयवाड़ा मंडल द्वारा कवर किए गए जिले: विजयवाड़ा मंडल आंध्र प्रदेश के सात राजस्व जिलों, नेल्लोर, प्रकाशम, गुंटूर, कृष्णा, पश्चिम गोदावरी, पूर्वी गोदावरी और विशाखापट्टनम में फैला हुआ है.

पर्यटक आकर्षण के स्थान:

विजयवाड़ा : इंद्र किलाद्रि पहाड़ी पर देवी कनक दुर्गा।

मंगलगिरि: श्री लक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी मंदिर (विजयवाड़ा से 15 किलोमीटर)। द्वारका तिरुमाला: श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर (विजयवाड़ा से 120 किलोमीटर)। अन्नावरम: श्री सत्यनारायण स्वामी मंदिर (विजयवाड़ा से 236 किलोमीटर और राजमंड्री से 90 किलोमीटर)।

पचराममः सभी पांच साईवरम आंध्र प्रदेश में हैं। वे हैं (1) पलाकोल्लू में क्षीरारामम (2) भीमावरम में सोमारामम (3) समालकोट में भीमारामम (4) राजमंड्री के पास द्राक्षरामम (5) अमरावती में अमरराम।

कोंडापल्ली: हल्की लकड़ी से बने खिलौनों के लिए प्रसिद्ध (विजयवाड़ा से 20 किलोमीटर) कुचिपुड़ी: अपनी कुचिपुड़ी शास्त्रीय नृत्य शैली (विजयवाड़ा से 50 किलोमीटर) के लिए प्रसिद्ध है।

मछलीपट्टनम: अपने कलंकारी प्रिंट (विजयवाड़ा से 60 किलोमीटर) के लिए जाना जाता है।

नरसापुर : अंतर्वेदी (वसिस्ता गोदावरी के तट पर स्थित) (नरसापुर से 15 किलोमीटर)